आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 फरवरी 2015

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,115
युगाब्द-5115, अंक-91-79, वर्ष-8,
माघ मास, कृष्ण पक्ष, फरवरी-2015
शुल्क- 9/ रुपये प्रति, वार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि:5-6 फरवरी, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

महर्षि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्र: 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com
संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

सनाद्दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः। कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुभिरा चरतो अन्यान्या॥-ऋ० १।११।६२।८

व्याख्यान– है स्त्री पुरुषो! तुम जैसे (सनात्) सनातन कारण से (दिवम्) सूर्य प्रकाश और (भूमा) भूमि को प्राप्त होकर (पुनर्भुवा) वार वार पर्य्याय से उत्पन्न होके (युवती) युवावस्था को प्राप्त हुए स्त्री पुरुष के समान (विरूपे) विविध रूप से युक्त (अक्ता) रात्रि (उषाः) दिन (स्वेभिः) क्षण आदि अवयव (रुशद्भिः) प्राप्ति के हेतु रूपादि गुणों के साथ (वपुर्भिः) अपनी आकृति आदि शरीर वा (कृष्णेभिः) परस्पर आकर्षणादि को (एवैः) प्राप्त करने वाले गुणों के साथ (अन्यान्या) भिन्न भिन्न परस्पर मिले हुए (पर्य्याचरतः) जाते आते हैं वैसे स्वयंवर अर्थात् परस्पर की प्रसन्नता से विवाह करके एक दूसरे के साथ प्रीति युक्त हो के सदा आनन्द में वर्त्तें।

सम्पादकीय

हाल ही में कुछ लोगों द्वारा एक मुद्दा बड़े जोर-शोर से उठाया जा रहा है कि हिन्दुओं को अधिक से अधिक बच्चे पैदा करने चाहिएं, जिससे वे अल्पमत में न आएं और मुस्लिमों की बढती आबादी का मुकाबला कर सकें। आइए इस विषय पर विचार करते हैं कि क्यों यह बात उठाई जाती है? क्या वास्तव में यह एक समस्या है? और यदि यह समस्या है तो क्या इसका समाधान यही है या कुछ और?

यह बात तो निश्चित है कि ऐतिहासिक, संस्कृतिक व धार्मिक (वास्तव में अधार्मिक) मान्यताओं के कारण मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या तेजी से बढती है और कानूनी मान्यताएं भी उसी के पक्ष में हैं जैसे बहु विवाह को कानूनी मान्यता, धार्मिक आधार पर ही परिवार नियोजन का विरोध। धरातल पर भले ही इस प्रकार की मान्यताएं शत्-प्रतिशत् लागू नहीं होती हैं लेकिन एक बड़े वर्ग को अवश्य प्रभावित करती हैं। एक समुदाय विशेष की जनसंख्या का औरों से तेज गति से बढ़ना जनसांख्यिक परिवर्तन (Demogphic Change) का एक कारण है, हांलाकि यह एक मात्र कारण नहीं है। और जनसांख्यिक परिवर्तन हमारे यहाँ होता रहा है, यह भी निश्चित है। और इसका प्रभाव भी दूसरे समुदायों पर पडता है तो दूसरे समुदाय के लोग उसको दूर करने का उपाय खोजते हैं। उसी को दूर करने के लिए हिन्दू समुदाय के कुछ लोग हिन्दुओं द्वारा अधिक बच्चे पैदा करने की बात करते हैं। और जब इस तरह की बातें उठाई जाती हैं तो उसकी प्रतिक्रिया भी होती है। समाज में अनेक लोग उसका विरोध करते हैं, महिलाओं की स्वतन्त्रता का प्रश्न उठाया जाता है।

आइए अब विचारते हैं कि अधिक बच्चे पैदा करना क्या समस्या का समाधान है? अगर जनसंख्या का प्रतिशत ही महत्वपूर्ण हो तो जब हिन्दुओं की संख्या सौ प्रतिशत थी उसके बाद भी क्यों विदेशी आक्रमणकारियों को हिन्दू नहीं रोक पाए, क्यों हजार वर्ष विदेशी मतावलम्बियों के पराधीन रहे? क्यों अपना एक बड़ा भू-भाग अपने से ही अलग करा बैठे? अर्थात कारण सिर्फ जनसंख्या का ही नहीं है, कारण कुछ और ही है, जिनके कारण ये परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। किसी मत को मानने वालों की संख्या केवल उसमें जन्म लेने वालों से नहीं बढती, अपितु सबसे तेजी से मतानुयायी बढाने का उपाय है दूसरे का मत-परिवर्तन कराना। और यही सबसे बड़ा कारण रहा है यहाँ कर जनसांख्यिक परिवर्तन का।

आइए अब इसी से सम्बन्धित कुछ और बिन्दुओं पर भी विचार करते हैं। पहले तो यही विचारणीय है कि क्या किसी समुदाय की अधिक जनसंख्या ही उसे सुरक्षित रखती है? किसी राष्ट्र में सुरक्षा और शान्ति इस बात पर निर्भर अधिक करती है कि वहां किस विचारधारा के लोग निवास करते हैं, यदि लोगों की विचारधारा चाहे वह बहुमत में हों या अल्पमत में, शान्ति ओर समृद्धि की अपेक्षा केवल कट्टरवाद तक सीमित है व धर्म की अपेक्षा मतवाद हावी है तो वहां आतंकी संगठन पनपते ही हैं चाहे अरब देशों में हो, युरोप में हो या दक्षिणी एशिया में हो।

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

दूसरा यह समझ लेना भी आवश्यक है कि किसी समुदाय की स्वाधीनता, समृद्धि और विकास मात्र उसकी संख्या पर निर्भर नहीं करता अपितु उस समुदाय के लोगों के सामर्थ्य और योग्यता पर ही मुख्यता निर्भर करता है। अत: यदि हिन्दू यही सोचते रहें कि हमारी संख्या बढने से ही हमारा उद्देश्य पूरा हो जाएगा तो वे पूरी संख्या में रहते हुए भी पराधीन रहे हैं,आज भी अपने आप को अल्पमत के लोगों से भी अधिक असुरक्षित महसूस करते हैं। अत: आवश्यकता तो इस बात की है कि अपनी संतानों को योग्य बनाएं, सक्ष्म बनाएं, सामर्थ्यशाली बनाएं, जिससे वे दूसरों के अनुगामी नहीं अपितु अग्रगामी बनें और इतने योग्य बनें कि अन्यों को भी अपने साथ मिला सकें, जिससे जनसांख्यिक परिवर्तन रुक सके। वास्तव में हो इसके विपरीत रहा है कि इनकी संख्या अधिक होते हुए भी अपनी कमियों के कारण स्वयं अपने को ही औरों में मिला देते हैं। अनेक लोग दूसरे मतों में चले जाते हैं। आवश्यकता इस बात कि है कि अपने अतीत को जानें –जब भूमण्डल पर श्री राम जैसे चक्रवर्ती सम्राट होते थे। उनके गुणों को जानें, अपने को योग्य बनाएं, यह समझने का प्रयास करें कि हमारे पूर्वज क्या थे। किन गुणों के कारण वे इतने महान थे कि कोई विधर्मी अधिक समय तक टिक नहीं पाता था। रावण व कंस जैसे विधर्मियों का सफाया कर दिया जाता था। हिन्दुओं को आवश्यकता है कि अपने अन्दर के अवगुणों को समाप्त करें, **अपने अन्दर की भिन्नताओं को मिटाएं, एक विचार, एक सिद्धान्त, एक ईश्वर के उपासक बनें,** अपने पूर्वजों की भांति श्रेष्ठ बनें, अर्थात् आर्य बनें। क्योंकि सभी हिन्दू, आर्यों के ही वंशज तो हैं, आर्यों की तरह ही तो वेदों को मानते हैं, अब वे भी आर्य बनें, वेद को भी आर्यों के दृष्टिकोण से समझें, अपने श्रेष्ठ पूवर्जों श्री राम व श्री कृष्ण की भांति आर्य पथ पर चलें। तभी वे एक विचार, एक सिद्धान्त पर चल पाएंगे, एक ईश्वर की उपासना कर पाएंगे तभी भिन्नताओं को मिटा पाएंगे, तभी सक्षम व योग्य बन पाएंगे, अन्यथा तो भिन्नताओं के कारण अस्सी प्रतिशत से अधिक की जनसंख्या होते हुए भी अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं। और जब योग्य होंगे, सक्षम, सबल होंगे तो अधिक बच्चे पैदा करने की आवश्यकता नहीं पडेगी, अपितु अन्य मतों को मानने वाले ही योग्यता व सक्षमता को देखकर साथ आ मिलेंगे आखिर उनके भी तो पूर्वज कभी न कभी आर्य रहे हैं। और जब आर्य बनेंगे तो एक सूत्र, एक विचार, एक सिद्धान्त, एक उपासना पद्धति, जैसे कि हम सबके पूर्वज मानते रहे हैं, उस पर चलेंगे। यही है उपाय इन समस्याओं को दूर कर राष्ट्र को समृद्ध सशक्त व उन्नतिशील बनाने का।

–आचार्य सतीश

चुनावों में मुद्दों के आधार पर समर्थन करेगा आर्य समाज

आर्यसमाज–उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली में 28 जनवरी को दिल्ली की आर्य समाजों एवं आर्यसंगठनों के प्रतिनिधियों की ''आर्य महासभा'' का आयोजन आर्य राष्ट्र परिषद् के तत्वावधान में किया गया, जिसमें सभी प्रतिनिधियों ने एकमत से निर्णय किया कि दिल्ली की आर्य जनता आने वाले दिल्ली विधान सभा चुनावों में मुद्दों के आधार पर मतदान करेगी। उपस्थित आर्य प्रतिनिधियों की और से जारी प्रेस विज्ञप्ति में आर्य राष्ट्र परिषद्, दिल्ली के अध्यक्ष आर्य सत्येन्द्र जी ने कहा कि आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही राष्ट्र भक्त संगठन रहा है, ओर राष्ट्रहित में हम आर्यों ने समय–समय पर अशिक्षा, अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष किया है, किन्तु दुर्भाग्य कि जहाँ हमने समाज से, देश से जातिवाद, भाई–भतीजावाद, अन्धविश्वास, अन्याय, नशाखोरी मिटाने के लिए अपना खून–पसीना बहाया वहीं दूसरी ओर राजनैतिक दलों ने, पार्टियों ने आर्यसमाज की मान्यताओं के विरुद्ध जातिवाद, भाई–भतीजावाद, अन्धविश्वास, अन्याय, नशाखोरी को पनपा करके ही सत्ता सुख भोगा है। अत: आर्य समाज ने यह तय किया है कि वर्तमान दिल्ली विधानसभा चुनाव में समाजहति और राष्ट्रहित के मुद्दों को सभी राजनैतिक दलों को दिया जाएगा, और जो राजनैतिक दल इन मुद्दों को पूर्ण करने का आश्वासन देगा, आर्य उसी राजनैतिक दल को पूर्ण समर्थन देगा। इस महासभा में राष्ट्रीय आर्यराज सभा, राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् समेत दिल्ली के दर्जनों आर्य संगठनों व सैकड़ों आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सम्मलित हुए।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	03 फरवरी	दिन–मंगलवार	मास–माघ	ऋतु–शिशिर	नक्षत्र–पुष्य
अमावस्या	18 फरवरी	दिन–बुधवार	मास–फाल्गुन	ऋतु–वसंत	नक्षत्र–श्रवण/धनिष्ठा
पूर्णिमा	05 मार्च	दिन–वीरवार	मास–फाल्गुन	ऋतु–वसंत	नक्षत्र–मघा
अमावस्या	20 मार्च	दिन–शुक्रवार	मास–चैत्र	ऋतु–वसंत	नक्षत्र–पूर्वा भाद्रपद

सम्पूर्ण भूमण्डल पर आर्य राज

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल

महाभारत शान्तिपर्व मोक्षधर्म में व्यास शुक संवाद में वर्णन है कि एक समय व्यास जी अपने पुत्र शुक्र और शिष्य सहित पाताल, जिसको इस समय अमेरिका कहते हैं उसमें निवास करते थे। शुक के प्रश्न के उत्तर में व्यास जी ने दूसरी साक्षी के लिए कहा तू मिथिलापुरी जाकर यही प्रश्न जनक राजा से कर। यह सुनकर शुक पाताल से मिथिलापुरी चले। प्रथम मेरु अर्थात् हिमालय से ईशान उत्तर और वायव्य देश में जो वसते हैं उनका नाम हरिवर्ष था अर्थात् हरि कहते हैं बन्दर को, उस देश के मनुष्य अब भी रक्त मुख अर्थात् वानर के समान भूरे नेत्र वाले होते हैं। जिनका नाम इस समय यूरोप है उन्हीं को संस्कृत में हरिवर्ष कहते थे। उन्हें देखकर चीन से फिर हिमालय एवं मिथिलापुरी आए। और श्री कृष्ण तथा अर्जुन पाताल में अश्वतरी अर्थात् अग्नि-यान नौका जिसको कहते हैं, पर बैठ के पाताल में जाके उद्दालक ऋषि को ले आए थे। धृतराष्ट्र का विवाह गान्धार जिसे कन्धार कहते हैं वहां की राजपुत्री से हुआ। माद्री पाण्डु की स्त्री ईरान के राजा की कन्या थी। और अर्जुन का विवाह पाताल जिसको अमेरिका कहते हैं वहां के राजा की लड़की उलोपी से हुआ अर्थात् उक्ष्वाकु से लेकर कौरव-पाण्डव सर्व भूगोल में आर्यों का राज एवं वेद का थोड़ा-थोड़ा प्रचार आर्यावर्त से भिन्न देशों तक में भी रहा। वर्तमान समय में भी हमसे दूर बसे देशों तक में अनेक ऐसे चिन्ह एवं अवशेष मिलते हैं जो सिद्ध करने हेतु पर्याप्त हैं कि आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य महाभारत काल तक इस पूरे भूमण्डल पर रहा है। वैसे तो बहुत देश हैं जहां वैदिक सभ्यता से जुड़े अनेक साक्ष्य मिलते रहते हैं किन्तु विषय विस्तार को ध्यान में रखकर हम कुछ मुख्य देशों का ही विवेचन यहां करते हैं।

अफगानिस्तान, ब्लूचिस्तान, सिन्ध-डा॰ एडवर्ड डी सशाऊ द्वारा संकलित एवं सम्पादित 'अलबरूनी का भारत' पुस्तक में वे सिद्ध करते हैं कि अफगानिस्तान में सभी प्राचीन राजमहल हिन्दुओं द्वारा बनवाए गए थे। अफगानी भाषा संस्कृत शब्दों से भरी पड़ी है। काबुल में आज भी महादेव आदि के मंदिर विद्यमान हैं जैसे कि हमें अजन्ता, एलोरा, भुज एवं नासिक में मूर्तियां मिलती हैं। उसी प्रकार अफगानिस्तान की बामियान घाटी में भी चट्टान काट कर बनाए गए अनेक मन्दिर प्राप्त होते हैं।

इसी प्रकार ब्लूचिस्तान भी संस्कृत नाम है। क्वेटो से कुछ मील दूर वाण नामक छोटे से नगर से कुछ दूरी पर एक पहाड़ी है जो हिन्दु तीर्थ स्थल रहा है, क्योंकि यही वह स्थान है जहां से लुढका कर प्राण ले लेने की आज्ञा पुराणों में वर्णित प्रहलाद के लिए हरिण्यकश्यप ने दी थी, पाकिस्तान बनने से पूर्व पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त में रहने वाले हिन्दु नृसिहं जयन्ती दिवस पर पर्वतीय देवालय की यात्रा किया करते थे।

जिस स्थान पर अकबर का जन्म हुआ वह अमरकोट कहलाता है। सिन्ध में स्थित इस नगर में अकबर के जन्म समय हुमायुं ने अमरकोट पर राज्य करने वाले हिन्दु राजपूत सरदार का आतिथ्य ग्रहण किया था।

ये उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि सिन्ध, ब्लूचिस्तान तथा अफगानिस्तान वे क्षेत्र थे जहां 1000 से 1200 वर्ष पूर्व भारतीय क्षत्रियों का राज्य था और वहां के सब लोग हिन्दू ही थे।

ईरान व इराक- ईरान (परशिया अथवा फारस) संस्कृत नाम हैं। यहां का शाही परिवार पहलवी हिन्दू क्षत्रिय परिवार है। पहलवी नाम का वर्णन हमें सर्वप्रथम रामायण में मिलता है। उसके बाद विक्रमादित्य के समय में भी इस राजवंश का वर्णन आता है। शाह उपाधि भी भारतीय नाम या उपाधि है। नेपाल का हिन्दू सम्राट भी इससे विभूषित है। भारत रक्षा हेतु राणा प्रताप को अपनी समस्त सम्पत्ति अर्पित करने वाला राष्ट्रभक्त भामाशाह था एवं ग्वालियर का राजा रामशाह था। यही नहीं भारतीय क्षत्रियों की भांति ईरानी भी अपना उद्गम सूर्यवंश से मानते हैं।

प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के समय पश्चिम एशिया में स्थित भारतीय सैनिकों ने कहा था कि उन्होंने ईरान, अफगानिस्तान एवं अन्य दूरस्थ निर्जन प्रदेशों में गणेश एवं शंकर जी के मन्दिर देखे थे। ईरानी कथाओं में हनुमान जी का वर्णन भी मिलता है। इसी भांति इराक की राजधानी बगदाद में भी एक अति प्राचीन अग्नि मन्दिर विद्यमान है, जो यही सिद्ध करते हैं कि इन देशों में कभी भारतीयों का राज्य रहा है। इसी प्रकार पारसी लोगों के हिन्दूओं की भांति 33 देवता हैं और पारसी नवरोज बिल्कुल वैदिक संवत्सरारंभ अर्थात् नव-वर्ष दिवस है जो सिद्ध करता है कि ये वैदिक मूल के हैं।

इंग्लैण्ड, यूनान, फ्रांस, जर्मनी के लोग भी कभी भारतीय वैदिक जीवन पद्धति के अनुयायी रहे हैं क्योंकि युनानी तथा भारतीय देवताओं, महाकाव्यों, रीति-रिवाजों एवं नामों में बहुत ज्यादा समानता है। यथा-थिओडोर शब्द संस्कृत मूल का है। थिओस-देवता एवं डोर-द्वार अर्थात् थियोद्वार या मन्दिर द्वार। इसी तरह फ्रैन्च में नागा का अर्थ सर्व, जानु अर्थ घुटने, सभी संस्कृत शब्द हैं। इसी प्रकार जर्मन में लुफ्तांसा, चर्कोजी आदि एवं अंग्रेजी तो सम्पूर्ण ही संस्कृत से ही भरी पड़ी है। अंग्रेजी में अपना अस्तित्व बनाए चल रहा संस्कृत शब्दों का पूरा असन्दिग्ध समूह इस बात का सशक्त साक्ष्य है कि यूरोप पर कभी भारतीयों का पूर्ण प्रभुत्व रहा है। जिस प्रकार टिकट, रेल, नागालैण्ड तथा स्टेसन आदि शब्दों का प्रचलन इस बात का प्रमाण है कि भारत पर कभी ब्रिटिश शासन रहा है।

उत्तरी ध्रुव क्षेत्र- रामायण एवं महाभारत दोनों प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में उत्तरी ध्रुव क्षेत्र पर आर्यों के जाने के प्रमाण हैं। श्री एम॰एन॰ दत्त द्वारा महाभारत के अंग्रेजी अनुवाद के शान्ति पर्व में भारतीयों के दो अन्वेषक दलों का वर्णन मिलता है जो उत्तरी ध्रुव क्षेत्र पर गए। एक दल का नेतृत्व एकत्, द्वित एवं तृत नामक अन्वेषकों ने किया एवं दूसरे दल का नेतृत्व ऋषि नारद ने किया। ऋषि नारद ने अन्वेषण अभियान पर जाते समय नर और नारायण नामक दो अन्य ऋषियों को बताया कि वेदों का सांगोपांग अध्ययन कर लेने के कारण मैं तो अभियान हेतु पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुका हूँ। कहा जाता है कि अकस्मात् नारद जी श्वेत द्वीप की उड़ान के लिए आकाश में उड़ गए, जो स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि उस समय वायुयात्रा भली-भांति ज्ञात थी। इसी प्रकार रामायण में वर्णन आता है कि सुग्रीव उत्तर दिशा में जाने वाले एक वानरों के दल को बताते हैं कि हिमालय को पार करने के बाद एक बर्फीला इलाका आएगा, इसके बहुत आगे शिशिर प्रदेश आएगा (आज का साइबेरिया) जो ध्रुव का अन्तिम कोना होगा। इसके आगे मत जाना क्योंकि इसके बाद मनुष्य नहीं रहता। जो सिद्ध करता है कि सुग्रीव को सम्पूर्ण भूमंडल का ज्ञान था और जानकारी होते हुए कहीं आना-जाना असंभव नहीं है।

इसी तरह यूरोप के लैटवियन क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा में पणिनीय व्याकरण के नियम ही लागू होते है। लैटविया के लोग परम्परागत रूप से विश्वास करते हैं कि उनके पूर्वज भारत से ही आए थे।

हमारी वैदिक सभ्यता स्कैन्डिनोविया में भी फैली थी। स्वयं स्कैन्डिनोविया शब्द ही संस्कृत का स्कन्ध नाभि है जिसका अर्थ योद्धाओं का घर है। स्कैन्डिनोविया और हिन्दू पुराणों विद्या, रीति-रिवाज एवं नियमों में समानता इस बात का प्रमाण है कि हिन्दू ही स्कैन्डिनोविया के संस्थापक थे।

मंगोलिया व जापान- मंगोलिया में सप्ताह के दिन अभी भी धारण किये हुए हैं यथा आदित्य (सूर्य), सोमिय, अंगरख, बधिय, शुक्र एवं शनिचर। आज भी सम्पूर्ण मंगोलिया में प्रचलित परम्परागत औषधीय पद्धति भारतीय आयुर्वेद की ही है। भारतीय सम्पाति पक्षी (गरूड) ही मंगोलियन राजधानी उलान बटोर का संरक्षक देवता है एवं भारतीयों की ही भांति वे भी अपना इतिहास मनु से प्रारम्भ करते हैं।

शेष पृष्ठ 4 पर..

पृष्ठ 3 का शेष

इसी तरह जापान में मल्लाओं की केवल लंगोटी धारण कर कुश्ती करने की शैली भारतीय मूल की है। यही बात रक्षा की कला जुजुत्सु की है। यह संस्कृत शब्द है जो भगवदगीता के प्रथम श्लोक में आता है। 'जुजुत्सु' यह युद्ध करने के इच्छुकों का द्योतक है। और जो विहार वहां पाए जाते हैं, उन्हें बौद्ध विहार मानना गलती है क्योंकि ये बौद्ध मत से पूर्व ही भारतीय ऋषियों द्वारा स्थापित सिद्धान्त प्रशिक्षण केन्द्र हुआ करते थे।

एशिया सम्राट विक्रमादित्य- कतिपय विद्वान यह भी मानते हैं कि इस्लाम पूर्व काल में मक्का में सर्व-अरब खण्डीय काव्य सम्मेलन हुआ करता था। इसमें उत्कृष्ट सम्मानित कविता स्वर्णथाल पर उत्कीर्ण कर मन्दिर के भीतर टांग दी जाती थी। इनमें से एक स्वर्णथाल पर बिन्तोई नामक कवि की कविता उत्कीर्ण है जिसमें वह सम्राट विक्रमादित्य का यशोगान कर रहा है। इस कविता की हिन्दी व्याख्या के कुछ अंश निम्न हैं (वे अत्यन्त भाग्यशील लोग हैं जो सम्राट विक्रमादित्य के काल में जन्मे एवं यहां वास किया। अपनी प्रजा कल्याण में रत वह एक कर्तव्यनिष्ठ राजा है। यहां अज्ञान, अन्धकार, आलस्य को विद्या के उषाकाल, जो विक्रमादित्य की कृपालुता का परिणाम है ने हर लिया है। यद्यपि हम विदेशी थे तथापि वह सम्राट हमारे संग उपेक्षा न कर सका। हमें विद्या एवं धर्म सिखलाने हेतु उन्होंने अपने देश से विद्वान भेजे जिनकी प्रतिभा सूर्य सदृश हमारे देश में चमकी। सम्राट ने पितृसदृश स्नेह हमसे किया) बिन्तोई कवि द्वारा विक्रमादित्य की प्रसंशा में रचित ये पक्तियां सिद्ध हैं कि पश्चिम की और बढ़ते हुए हमें अफगानिस्तान, ब्लूचिस्तान, कुर्दिस्तान, ईरानम्, सिविस्थात, ईराक एवं अखस्थान जैसे संस्कृत नाम इसलिए मिलते हैं कि कभी संस्कृत ज्ञाता आर्यों का राज वहां रहा है।

महाभारत व अन्य प्रमाण- हमारे प्राचीन ग्रन्थ महाभारत में पांडवों द्वारा अनेक देशों के विजय अभियानों का वर्णन आता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में विभिन्न देशों में खुदाई में अनेक हिन्दू मन्दिर एवं मूर्तियां मिलती रहती हैं तथा वियतनाम देश में विष्णु भगवान की 4000 वर्ष पुरानी मूर्तियां मिलती हैं एवं कुछ समय पूर्व चीन में हिन्दू मन्दिर मिला था जो सिद्ध करते हैं कि वहां हमारी सभ्यता आर्य सम्राटों द्वारा फली फूली है। यही नहीं माली एवं सुमाली दो अफ्रीकी राज्यों के नाम रामायण में मिलते हैं। यह भी हमें ज्ञात है कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, वर्मा, तिब्बत एवं चीन द्वारा कब्जाया भारत (क्योंकि कुछ इतिहासकार मानते हैं कि 15 वीं शताब्दी तक चीन हमारा अंग था) आदि हमसे कुछ समय पूर्व ही अलग हुए हैं। अतः उपरोक्त प्रमाणों से स्वयं सिद्ध है एवं कहा जा सकता है कि एक समय सम्पूर्ण भूमंडल पर आर्यराज रहा है।

विशेष - प्राचीनकान में भारतीय विस्तार कितना व्यापक था, को जानने के लिए पाठक ''इन्डिया इन ग्रीस (इतिहासकार पोकरू)'', गार्डन चाइल्ड की न्यू लाईट ऑन द मोस्ट एशिएन्ट ईस्ट, फणीन्द्रनाथ कृत इन्डियन टीचर्स ऑफ चायना, राहुल सांस्कृत्यामन कृत जापान, सेन कृत एशिएन्ट खोतान, वी. ए. स्मिथ कृत अर्ली हिस्ट्री ऑफ इन्डिया, रामचन्द्र शर्मा कृत अरब और भारत के सम्बन्ध, जगमोहन वर्मा कृत फाहियान, महाभारत एवं समस्त विश्व को भारत के अजस्त्र अनुदान और भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें आदि पुस्तकों का भी अध्ययन कर सकते हैं।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :-
krinvantovishwaryam@gmail.com
पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	आर्यसमाज, सिहोर, म०प्र०	03-04 जन.
2.	आर्यसमाज, माहरा, सोनीपत, हरियाणा	03-04 जन.
3.	आर्यसमाज, क्योडक, कैथल, हरियाणा	03-04 जन.
4.	आर्यसमाज, शिवाजी कॉलौनी, रोहतक, हरियाणा	03-04 जन.
5.	खण्डेलवाल धर्मशाला, जुरेहरा, भरतपुर, राजस्थान	10-11 जन.
6.	गुरुकुल चित्तौड़ा झाल, उ० प्र०	17-18 जन.
7.	आर्ष महाविद्यालय, ट्राम्बा, राजकोट, गुजरात	17-18 जन.
8.	आर्य कन्या विद्यालय, भिवानी, हरियाणा	24-25 जन.
9.	प्राईमरी स्कूल, खिड़की, कूरुक्षेत्र, हरियाणा	24-25 जन.
10.	गांव लालू खेड़ी, मुजफ्फरनगर, उ0प्र0	31-जन.- 01-फर.
11.	आर्यसमाज, करनाल रोड़, कैथल, हरियाणा	31-जन.- 01-फर.

आर्या प्रशिक्षण सत्र

1.	आर्यसमाज दरियापुर कलां, दिल्ली	03-04 जन.
2.	डी. ए. वी. इन्टर कॉलेज, टटीरी बागपत, उ० प्र०	03-04 जन.
3.	आर्यसमाज, तिवड़ा रोड़, मोदीनगर, गाजियाबाद	10-11 जन.
4.	आर्यसमाज, मॉडल टाउन, हिसार, हरियाणा	17-18 जन.

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www. aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

विशेष सूचना

आर्य उपासक सत्र पूर्व की भांति प्रत्येक माह के अन्तिम शनिवार-रविवार को आर्यसमाज, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक में आयोजित किया जाता है।

प्राथमिक सत्र में प्रशिक्षण के उपरान्त विषयों के प्रमाणीकरण के लिए व उन विषयों को और गहराई से समझने के लिए प्रत्येक आर्यगण के लिए यह सत्र आवश्यक है। इस सत्र में उपासना आदि विषयों के बारे में विस्तृत रूप में चर्चा होती है, अतः प्रत्येक आर्य इस सत्र में अवश्य सम्मिलित हो। सत्र में भाग लेने के लिए पहले से सूचना देना व पंजीकरण कराना आवश्यक है। इसके लिए आप आचार्य जितेन्द्र जी से दूरभाष न. 9416201731 पर संपर्क करें।

संध्या काल

फाल्गुन मास, वसंत ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(04 फरवरी 2015 से 05 मार्च 2015)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

चैत्र मास, वसंत ऋतु, कलि-5116, वि. 2072
(06 मार्च 2015 से 03 अप्रेल 2015)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

क्या वाकई हनुमान जी बन्दर थे?

-आचार्य धर्मपाल, कुरुक्षेत्र

क्या वाकई में हनुमान की पूंछ थी? ऋषि दयानन्द कहते हैं कि **असत्य का त्याग और सत्य को धाारण करना ही धर्म है।** वाल्मीकि रामायण जो श्री राम के जीवन का मूल व प्रामाणिक ग्रंथ है। बाकी सभी रामायण तो उसी को आधार बनाकर के लिखी गई हैं, चाहे वह तुलसीदासजी व कम्बजी या किसी और अन्य विद्वान के द्वारा लिखी गई हो।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी महाराज के पश्चात् परम वीर शिरोमणि हनुमान जी का नाम स्मरण किया जाता है। हनुमान जी का हम जब चित्र देखते हैं तो उसमें उन्हें एक बन्दर के रूप में चित्रित किया गया है जिनके एक पूंछ भी है। हमारे मन में प्रश्न भी उठते हैं व उस प्रश्न का उत्तर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इज्ञानी लोग वीर हनुमान का नाम लेकर परिहास करने का असफल प्रयास करते हैं।

आओ इन प्रश्नों का उत्तर वाल्मीकि रामायण से ही प्राप्त करते हैं- सर्वप्रथम **'वानर'** शब्द पर विचार करते हैं।

(1) सामान्य रूप से वानर शब्द से यह अभिप्रेत कर लेते हैं कि वानर का अर्थ होता है बन्दर **(कपि)**, परन्तु अगर इस शब्द का विशलेषण करें तो वानर शब्द का अर्थ होता है वन में रहने वाला, वहां का अन्न ग्रहण करने वाले को गिरिजन कहते हैं उसी प्रकार वन में रहने वाले को वानर कहते हैं। वानर शब्द से किसी योनि विशेष, जाति, प्रजाति अथवा उपजाति का बोध नहीं होता।

(2) सुग्रीव व बालि का जो चित्र हम देखते हैं उसमें उनकी पूंछ दिखाई देती है, परन्तु उनकी स्त्रियों की कोई पूंछ नहीं होती? नर-मादा का ऐसा भेद संसार में किसी भी वर्ग में देखने को नहीं मिलता। इसलिए यह स्पष्ट होता है की हनुमान व अन्य वानर वीर आदि के पूंछ होना केवल एक चित्रकार की कल्पना मात्र है।

(3) किष्किन्धा कांड [2/29-32] में जब श्री रामचन्द्र जी महाराज की पहली बार ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से भेंट हुई तब दोनों में बातचीत के पश्चात रामचन्द्रजी लक्ष्मण से बोले-

नान् ऋग्वेद विनीतस्य ना यजुर्वेद धारिणः।
ना सामवेदविदुषः शक्यमेवम् प्रिभाषतुम्॥

अर्थात् 'ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं है तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं किया है, वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का कई बार अभ्यास किया है, क्योंकि इतने समय तक बोलने में इन्होंने किसी भी प्रकार के अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है। संस्कार संपन्न, शास्त्रीय पद्यति से उच्चारण की हुई इनकी वाणी हृदय को हर्षित कर देती है।'

(4) सुन्दर कांड [30/18-20] में हनुमान अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में बैठी हुई सीता को अपना परिचय देने से पहले हनुमानजी सोचते हैं ''यदि द्विजाति [ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य] के समान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूँगा तो सीता मुझे रावण समझकर भय से संत्रस्त हो जाएगी। मेरे इस वनवासी रूप को देखकर तथा नागरिक संस्कृत को सुनकर पहले ही राक्षसों से डरी हुई यह सीता और भयभीत हो जाएगी। मुझको कामरूपी रावण समझकर भयातुर विशालाक्षी सीता कोलाहल आरंभ कर देगी। इसलिए मैं सामान्य नागरिक के समान परिमार्जित भाषा का प्रयोग करूँगा।''

इस प्रमाणों से सिद्ध होता है कि हनुमान जी चारों वेद, व्याकरण और संस्कृत सहित अनेक भाषाओं के ज्ञाता भी थे।

(5) हनुमान जी के अतिरिक्त अन्य वानर जैसे की बालि पुत्र अंगद का भी वर्णन वाल्मीकि रामायण में संसार के श्रेष्ठ महापुरुष के रूप में किष्किन्धा कांड 54/2 में हुआ है, हनुमान व बालि पुत्र अंगद को अष्टांग बुद्धि से सम्पन्न, चार प्रकार के बल से युक्त और राजनीति के चौदह गुणों से युक्त मानते थे। बुद्धि के यह आठ अंग हैं- **सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर धारण करना, ऊहापोह करना, अर्थ या तात्पर्य को ठीक-ठीक समझना, विज्ञान व तत्व विज्ञान।**

चार प्रकार के बल हैं - **साम, दाम, दंड, भेद** और राजनीति के चौदह गुण हैं- **देशकाल का ज्ञान, दृढ़ता, कष्टसहिष्णुता, सर्वविज्ञानता, दक्षता, उत्साह, मंत्रगुप्ति, एकवाक्यता, शूरता, भक्तिज्ञान, कृतज्ञता, शरणागत, वत्सलता, अधर्म के प्रति क्रोध और गंभीरता।** भला इतने गुणों से सुशोभित अंगद बन्दर कहां से हो सकता है?

(6) अंगद की माता तारा के विषय में मरते समय किषकिन्धा कांड [16/12] में बालि ने कहा था कि ''सुषेण की पुत्री यह तारा सूक्ष्म विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में सवर्था निपुण है। जिस कार्य को यह अच्छा बताए, उसे निःसंग होकर करना। तारा की किसी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता।''

(7) किषकिन्धा कांड [25/30] में बालि के अंतिम संस्कार के समय सुग्रीव ने आज्ञा दी-मेरे ज्येष्ठ बन्धु आर्य का संस्कार राजकीय नियम के अनुसार शास्त्र अनुकूल किया जाए। किषकिन्धा कांड [26/10] में सुग्रीव का राजतिलक हवन और मन्त्रादि के साथ विद्वानों ने किया।

(8) अब जहां तक जटायु का प्रश्न है वह गिद्ध नामक पक्षी नहीं था। जिस समय रावण सीता का अपहारण कर उसे ले जा रहा था तब जटायु को देखकर सीता ने कहा हे आर्य जटायु! यह पापी राक्षसपति रावण मुझे अनाथ की भांति उठाए ले जा रहा है।

सन्दर्भ -अरण्यक काण्ड

जटायो पश्य ममार्य ह्रियमाणमानाथवत्।
अनेन राक्षसेद्रेणकरुणम् पाप कर्मणा॥ [29/25]

अर्थात् यहां जटायु को आर्य और द्विज कहा गया है। यह शब्द किसी पशु-पक्षी के सम्बोधन में नहीं कहे जाते। रावण को अपना परिचय देते हुए जटायु ने कहा- मैं गृध कूट का भूतपूर्व राजा हूँ और मेरा नाम जटायु है **सन्दर्भ-अरण्यक 50/4 (जटायुः नाम नाम्ना अहम् गृध्र राजो महाबलः)** यह भी निश्चित है कि पशु-पक्षी किसी राज्य का राजा नहीं हो सकते। इन प्रमाणों से यह सिद्ध है कि जटायु पक्षी नहीं अपितु एक मनुष्य था जो अपनी वृद्धावस्था में जंगल में वास कर रहा था।

(9) जहां तक जाम्बवान के रीछ होने का प्रश्न है जब राम-लक्ष्मण मेघनाथ के ब्रह्मास्त्र से घायल हो गए थे तब किसी को भी उस संकट से बाहर निकलने का उपाय नहीं सूझ रहा था। तब विभीषण और हनुमान जाम्बवान के पास गये, तब जाम्बवान ने हनुमान का हिमालय जाकर ऋषभ नामक पर्वत और कैलाश नामक पर्वत से संजीवनी नामक औषधि लाने को कहा था। [सन्दर्भ युद्ध कांड सर्ग 74/31-34] आपातकाल में बुद्धिमान और विद्वान जनों से संकट का हल पूछा जाता है और युद्ध जैसे काल में ऐसा निर्णय किसी अत्यंत बुद्धिमान और विचारवान व्यक्ति से पूछा जाता है। पशु-पक्षी आदि से ऐसे संकट काल में उपाय पूछना सर्वप्रथम तो संभव नहीं है, दूसरे बुद्धि से परे की बात है।

इन सब वर्णन और विवरणों को बुद्धि पूर्वक पढने के पश्चात् कौन मान सकता है कि हनुमान, बालि, सुग्रीव आदि विद्वान एवं बुद्धिमान मनुष्य न होकर बन्दर आदि थे। यह केवल मात्र कल्पना है और अपने महापुरुषों के विषय में असत्य कथन है। कुछ मूर्ख हनुमानजी आदि को बन्दर सिद्ध करने के लिए ''डार्विन के सिद्धान्त'' का भी तर्क देते हैं, तो उन अक्ल के अन्धों को बता देना चाहता हूँ कि डार्विन के सिद्धान्त को उसके ही देश में नहीं पढ़ाया जाता, वहां उसे कोरी गप्प कहते हैं, और वैज्ञानिकों के अनेक सिद्धान्त डार्विन के सिद्धान्त का विरोध करते हैं। डार्विन के सिद्धान्त के बारे में जानने हेतु नजदीक आर्य समाज में जाकर ''वैदिक सम्पत्ति'' नामक पुस्तक पढ़ लेना जिसमें 'भारत की विश्व भर को विज्ञान के क्षेत्र में दी गई देन है' व डार्विन जैसे गप्पेबाज वैज्ञानिकों के गप्पों की विस्तार से पोल-खोल रखी है।

अगर भारतीय जनमानस में फैले अंधकार, अन्धविश्वास, पाखंड व मिथकों की पोल-खोल करके पुनः धरती पर ''वैदिक युग'' ''रामराज्य'' की स्थापना करने के फलस्वरूप समाज मुझे भी ऋषि दयानन्द की तरह 16-16 बार जहर देकर के मारना चाहेगा तो में मरना स्वीकार करूगां लेकिन अपने ''वैदिक धर्म'' को मिटने नहीं दूंगा।

!! सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय !! लौट चलो वेदों की और.....

धर्म और मत-मतान्तर

-आर्य रमेश रोहिल्ला, नांगलोई, दिल्ली

आज संसार में जितनी भी अशांति, हत्या, बलात्कार, अत्याचार, आंतकवाद, अन्धविश्वास, दरिद्रता आदि बढ़ रही है, उसका मूल कारण धर्म के नाम पर बनाए गए विभिन्न मत-मतांतरों, सम्प्रदायों, मजहबों आदि को अज्ञानियों द्वारा पोषित करना है। धर्म और मजहब के अन्तर को न समझने के कारण इनको एक ही समझना बड़ी भूल है जो संसार में फैली अशांति के लिए उत्तरदायी है। प्राय: अपने आप को प्रगतिशील समझने वाले लोग धर्म और मजहब को एक समझते हैं, जबकि ऐसा नहीं है! धर्म और मजहब, मत-मतांतरों के अन्तर को समझ कर ही वास्तविक धर्म को जान सकते हैं।

1. धर्म और मजहब एक समान अर्थ नहीं रखते और न ही धर्म का अर्थ ईमान या विश्वास है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बतलाए गए हैं-

धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

अर्थात् **सन्तोष, क्षमा, मन को दबाना, अन्याय से किसी की वस्तु न लेना, शारीरिक पवित्रता, इन्द्रियों का निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना।** अत: धर्म क्रियात्मक वस्तु है जबकि मजहब विशवासात्मक वस्तु है।

2. धर्म के जो उपरोक्त लक्षण मनु महाराज द्वारा बतलाए गए हैं वह पूरी मानवता के लिए समान प्रभाव रखते हैं। कोई भी सभ्य मनुष्य इनका विरोध नहीं करेगा। जबकि मतावलम्बी केवल अपने मत प्रमुख द्वारा कही बातों को ही मानते हैं। मत-मतान्तर अनेक हैं और सबकी विचारधारा अलग-अलग है इसलिए मत, मजहब की बातें सार्वभौमिक नहीं हैं। यद्यपि धर्म की आंशिक बातें सभी मतों में विद्यमान होने से उनका अस्तित्व बना हुआ है।

3. धर्म सदाचार सिखाता है और धर्म का सदाचार से सीधा सम्बन्ध है। किसी भी मजहब, मत का अनुयायी न होने पर भी कोई भी व्यक्ति धर्मात्मा बन सकता है। परंतु मजहबी या पंथी होने के लिए सदाचारी होना अनिवार्य नहीं है। जबकि कोई कितना ही ईश्वर उपासक, उच्चकोटि का सदाचारी विद्वान क्यों न हो वह उस वक्त तक मजहबी या पंथाई नहीं बन सकता जब तक वह सच्चा सौदा, सन्त कृपालु, ब्रह्मकुमारीज आदि के गुरूओं का चेला न बने। बिना उनका चेला बने आप उनके मत-सम्प्रदाय का सदस्य नहीं कहला सकता! ऐसे ही जब तक कोई बाईबिल और ईसा मसीह पर विश्वास नहीं करेगा इसाई नहीं बन सकता और हजरत मोहम्मद तथा कुरान पर ईमान नहीं लाता मुसलमान नहीं बन सकता! इससे पता चलता है ये मत-पंथ और मजहब मनुष्य कृत हैं, अप्राकृतिक तथा अस्वाभाविक हैं जब कि धर्म मनुष्य के स्वभाव के अनुकुल धारण करने योग्य है।

4. धर्म से मनुष्य का सीधा सम्पर्क ईश्वर से जुड़ता है जिससे मनुष्य को आत्मिक बल मिलता है व अपने आपको स्वतन्त्र व प्रसन्नचित महसूस करता है मनुष्य धर्मानुसार आचरण व अष्टांगयोग विधि अपना कर ईश्वर साक्षात्कार व मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जबकि मत-मतातंरों के प्रवर्तक स्वयं को गुरू कहते हैं तथा जीव को मोक्ष में भेजने के लिए सिफारिस करने की आवश्यकता बताते हैं। ईसाई व मुस्लिम मत में भी कयामत के दिन न्याय के लिए मत-प्रवर्तक की साक्षी इसी प्रकार का उदाहरण है। यहां तक कि वह स्वयं को ही भगवान घोषित कर देते हैं और अपने विशेष कृपा पात्र शिष्यों को स्वर्ग भेजने या मोक्ष देने का झूठा प्रलोभन देकर उनके धन व सम्मान को हथिया लेते हैं।

5. धर्म सभी मनुष्यों को प्राणी मात्र से प्रेम करने व दूसरों के हितों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक देने की शिक्षा देते हैं ताकि सारा संसार सुखपूर्वक रह सके। जबकि पंथ वाले केवल अपने ही गुरू के शिष्यों के साथ प्रेम से रहने व दु:ख के समय साथ देने की शिक्षा देते हैं। यहां तक कि कुछ कट्टर मजहबी माँसाहार व पशुओं को ही नहीं मनुष्यों की भी कुर्बानी (बलि) की शिक्षा देते हैं। तथा कुछ तो अपने मजहब को अपनाने व प्रसार के लिए मनुष्यों का कत्लेआम तक करते हैं जैसाकि आजकल इराक व सीरिया में हो भी रहा है। बाईबिल कहती है इसाई बनाओ, कुरान कहती है मुसलमान बनाओ और वेद कहते हैं- **मनुर्भव:** अर्थात् मनुष्य बनाओ।

6. धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। धर्मिक गुणों का धारण करना ही मनुष्यत्व है। खाना-पीना, सोना, संतान उत्पन्न करने जैसे कर्म तो जानवर भी करते हैं। केवल धर्म ही वो विशेष गुण है जो मनुष्य को पशुओं से अलग करता है। धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान ही है। कहा गया है-**'धर्मेण हिना: पशुभि: समाना:।'** परन्तु मजहब मनुष्य को केवल मजहबी या पंथाई बनाता है। गुरू के आदेश को भगवान का आदेश बताकर अनुयाईयों को डराते हैं तथा उस निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ ईश्वर के बारे में कुछ नहीं बताते। अगर ईश्वर का सही ज्ञान बाँटने लगे तो इनको कौन भगवान मानेगा और इनकी धार्मिक (तथाकथित) दुकानें बन्द होने का खतरा पैदा हो जाएगा।

8. धर्म मनुष्य को पुरूषार्थी बनाता है क्योंकि वह ज्ञान पूर्वक सत्य आचरण से ही अभ्युदय (उत्थान) व मोक्ष प्राप्ति की शिक्षा देता है। मनुष्य पुरूषार्थ से ही अपना, परिवार व समाज का हित करते हुए अपना इहलोक तथा परलोक सुधार सकता है। परन्तु मजहब मनुष्य को आलसी बनाने की शिक्षा दे रहे हैं। उनका कहना है कि उनके मत-मजहब के मंतव्यों को मानने भर से या गुरू कृपा से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। कुछ तो मूर्ति को ही भगवान मान कर उनकी पूजा कर पण्डे-पुजारियों की अय्यासी के लिए अपना मेहनत से कमाया धन चढ़ावे के रूप में देते हैं और सोचते हैं कि मूर्ति हमारी मनोकामना पूर्ण करेगी, अब हमें पुरूषार्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं। यह बताना भी उचित नहीं समझते कि वेद की आज्ञाओं का पालन करना ही धर्म है।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

इस सत्र को करके मैं बहुत खुश हूं क्योंकि मैंने इस सत्र से बहुत कुछ जाना है। इसमें मैंने धर्म के बारे में, समाज के बारे में, ईश्वर व विश्वास व छूआछूत के बारे में, राष्ट्र के बारे में आदि इन के बारे में जाना है, इसमें बहुत सी जानकारी प्राप्त की है जिसमें मैं आध्यात्मिक, मानसिक व शरीरिक आदि ज्ञान को पूर्णरूपेण जान पाया हूँ, इसमें जिस वस्तु का हमें ज्ञान नहीं था उस को भी जाना है, इसमें मुख्यत: हमारे दिमाग को सोचने पर मजबूर किया है। जिससे हमें पता लगा कि हम कहाँ पर थे, और इस सत्र को करने के बाद अब कहाँ पर पहुचे हैं। आर्यावर्त का एक आर्य होने से मैं अब इसमें यह सहयोग करूगां कि जितने ज्यादा से ज्यादा आर्यो को जागरूक करूँगा कि वे वेदांग की शिक्षा की ओर प्रेरित हों तथा मैं इस देश में एकता का प्रसार करूँगा व इस देश को फिर से आर्यावर्त बनाने में पूरा सहयोग करूँगा तथा मैं इसमें तन-मन-धन से अपना सहयोग करूँगा।

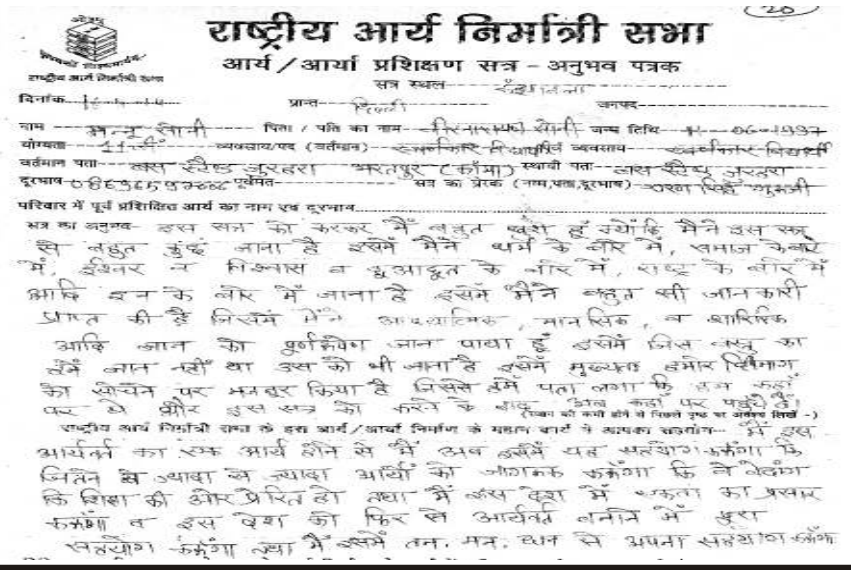

नाम- मन्नू सोनी, आयु-18 वर्ष, योग्यता-11वी
कार्य- विद्यार्थी, पता-जुरहरा, भरतपुर, राजस्थान

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

मैंने सत्र में आकर धर्म, सत्य, के बारे में जाना और मैंने जाना कि ईश्वर एक है तथा सभी लोगों का धर्म भी एक है, और ईश्वर को उपासना के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। और मूर्तिपूजा एक पाखण्ड है। मैं सदैव आर्यावर्त के नियमों का पालन करूँगा तथा उनके अनुसार चलूँगा और राष्ट्र हित के लिए सदैव तत्पर रहूँगा, तथा अन्य लोगों को भी आर्य बनाने के लिए प्रेरित करूँगा।

मैं अन्य लोगों को आर्य बनाने के लिए प्रेरित करूँगा तथा तन और मन से पूरी सहायता करूँगा।

मनुज साहू, आयु-19 वर्ष, योग्यता-बी॰ कॉम॰
कार्य-विद्यार्थी, पता-जुरहरा, भरतपुर, राजस्थान

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

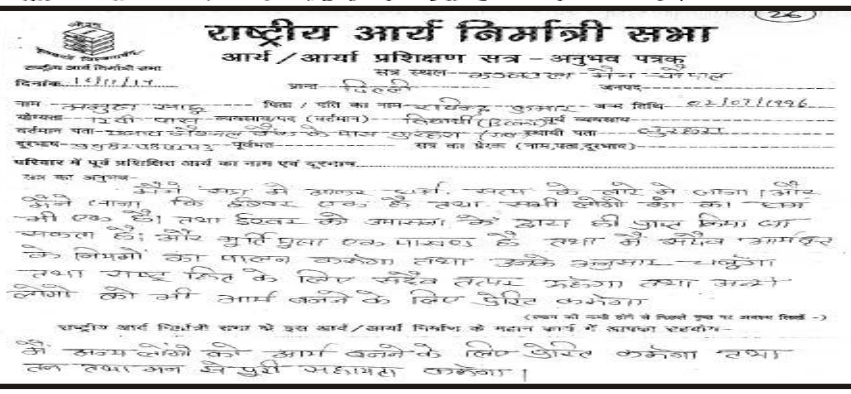

इस सत्र में बैठने का अनुभव काफी अच्छा रहा। इस सत्र से पूर्व ईश्वर के बारे में काफी मतभेद थे। मैं मूर्तिपूजा में विश्वास करता था। और भगवान के अस्तित्व के बारे में पूर्ण ज्ञान नहीं था। मैं पूर्ण रूप से पुरूषार्थ नहीं करता था। मैं समय का पाबंद नहीं था। लेकिन सत्र के इन दो दिनों ने मेरे जीवन रूपी चक्षु खोल दिये हैं। मेरे जीवन के अगर 25 वर्षों को एक तरफ में और सत्र के दो दिनों को एक तरफ रखा जाए तो ये सत्र के दो दिन मेरे 25 वर्षों पर भारी पड़ रहे हैं। इन दो दिनों में मुझे अपने जीवन के लक्ष्य को जान लिया है। मुझे भगवान के निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, दयालु रूप को जान लिया है। मैंने अब यह समझ आ गया है कि अगर हमें अपने भविष्य को सुधारना है तो हमें आर्य बनना ही पड़ेगा। हम आर्य बनकर ही देश की रूप रेखा को सुधार सकते हैं। इसलिए आज से आर्य बनकर देश के भविष्य को सुधारने की ठान ली है। और वैदिक धर्म का प्रचार करूँगा। तन-मन-धन से जो सहयोग बनेगा हमेशा तत्पर रहूँगा।

शीतल कुमार, आयु-25 वर्ष, योग्यता-बी॰ ए॰,
कार्य-दिल्ली पुलिस, पता- मुन्डाहेडा, झज्जर, हरियाणा

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यो को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के अध्यक्ष पं. लोकनाथ जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	आर्यसमाज, नांगलोई, दिल्ली	14-15 फरवरी	आर्य रमेश रोहिल्ला	9999052596
2.	आर्यसमाज, किनाना, जीन्द, हरियाणा	14-15 फरवरी	आर्य विनोद	9728510899
3.	डी. ए. वी. इन्टर कॉलेज, टटीरी बागपत, उ॰ प्र॰	14-15 फरवरी	आर्य अवनीश	9868301236
4.	आर्यवीर कॉलेज, राजकोट, गुजरात	14-15 फरवरी	अंकित भाई	7575808534
5.	आर्यसमाज डूंगरगढ़, बीकानेर, राजस्थान	14-15 फरवरी	आर्य अमित	8739949171
6.	आर्यसमाज, सिहोर, म॰प्र॰	28 फर.-01 मार्च	आर्य आशीष	8720850615
7.	आर्यसमाज, महावीर नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश	14-15 मार्च	आर्य रितेश	9039205144
	आर्या प्रशिक्षण सत्र			
1.	आर्यसमाज पिनगवा, मेवात, हरियाणा	21-22 फरवरी	आर्य अमरचन्द	9812606465
2.	आर्यसमाज, तिवड़ा रोड़, मोदीनगर, गाजियाबाद	14-15 मार्च	आर्य नारायण सिंह	9785239372

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

आर्या प्रशिक्षण सत्र (03-04 जनवरी) दरियापुर कलां, दिल्ली में आचार्या इन्दिरा जी व आर्या रोशनी जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (10-11 जनवरी) आर्यसमाज, खण्डेलवाल धर्मशाला, जुरेहरा, भरतपुर, राजस्थान में आचार्य राजेश जी व आचार्य देवेन्द्र जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (03-04 जनवरी) आर्यसमाज, सिहोर, मध्यप्रदेश में आचार्य योगेश जी व आर्य कुंवरपाल जी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए वार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।